

RISHI VISHWAMITRA VIDYA FOUNDATION

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल

ऋग्वेद मन्त्र १.२.७

शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक विश्लेषण

मूल मन्त्र

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसं ।
धियं घृताचीं साधन्ता ॥७॥

पदपाठ

मित्रम् । हुवे । पूतदक्षम् । वरुणम् । च । रिशादसम् ।
धियम् । घृताचीम् । साधन्ता ॥७॥

शब्दार्थ (Word Meanings)

मित्रम्: मित्र देव को / (वैज्ञानिक अर्थ में) ब्रह्माण्डस्थ सूर्य या शरीरस्थ प्राण वायु को ।

हुवे: मैं बुलाता हूँ / ग्रहण करता हूँ ।

पूतदक्षम्: पवित्र बल वाले को (पूत = पवित्र, दक्ष = बल) ।

वरुणम्: वरुण देव को / (वैज्ञानिक अर्थ में) बाह्य वायु या शरीरस्थ अपान वायु को ।

च: और ।

रिशादसम्: हिंसक शत्रुओं (रिशा) को खाने वाले (अदसम्) / रोगों का नाश करने वाले ।

धियम्: कर्म को / प्रज्ञा (बुद्धि) को ।

घृताचीम्: जल (वर्षा) प्रदान कराने वाली / ज्ञान को प्राप्त कराने वाली (क्रिया) ।

मन्त्र का भावार्थ (Translations)

१. आचार्य सायण का भाष्य (परम्परागत / यज्ञीय दृष्टिकोण)

"मैं इस यज्ञ कर्म में हवि प्रदान करने के लिए, पवित्र बल वाले 'मित्र' देव का और हिंसक शत्रुओं का भक्षण (नाश) करने वाले 'वरुण' देव का आवाहन करता हूँ। ये दोनों मित्रावरुण देव कैसे हैं? ये जल की वृष्टि कराने वाले कर्म (अथवा बुद्धि) को भली-भाँति सिद्ध करने वाले हैं।"

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती का भाष्य (वैज्ञानिक एवं यौगिक दृष्टिकोण)

प्रमाण: "प्राणो वै मित्रोऽपानो वरुणः" - शतपथ ब्राह्मण ८.२.५.६

"मैं सर्वव्यवहार के सुख हेतु, ब्रह्माण्ड में स्थित सूर्य और शरीर में स्थित 'प्राण' (मित्र) तथा बाहर स्थित वायु और शरीर में स्थित 'अपान' (वरुण) को बाह्य और आभ्यन्तर विद्या की प्राप्ति के लिए ग्रहण करता हूँ। ये प्राण-अपान और सूर्य-वायु अत्यंत पवित्र बल वाले और रोगों व शत्रुओं का नाश करने वाले हैं। ये दोनों शक्तियाँ जल/प्रकाश को प्राप्त कराने वाली क्रिया और धारणावती बुद्धि (प्रज्ञा) को भली-भाँति सिद्ध करती हैं।"

तात्पर्य: इस मन्त्र में पर्यावरण (सूर्य-वायु) और योग विज्ञान (प्राण-अपान) के सन्तुलन से बुद्धि और बल की सिद्धि का वैज्ञानिक रहस्य छिपा है।

व्याकरणिक व्युत्पत्ति (Grammatical Derivation)

मित्रम्	'मित्र' शब्द पुँल्लिङ्ग है। प्रातिपदिक स्वर से अन्तोदात्त है। (निघण्टु ५.४ में पदनाम)।
हुवे	'ह्वेज्' धातु (बुलाने अर्थ में)। पाणिनीय सूत्र 'बहुलं छन्दसि' (२.४.७३) से 'शप्' का लुक् और 'ह्वः' संप्रसारणम् (६.१.३२) से उवङ् (उव्) आदेश हुआ है। दयानन्द जी के अनुसार यह व्यत्यय से आत्मनेपद और लिङ् के अर्थ में लट् लकार है।
पूतदक्षम्	पूतं दक्षं यस्य तम् (बहुव्रीहि समास)। 'पूत' शब्द प्रत्यय स्वर से अन्तोदात्त है। बहुव्रीहि समास में पूर्वपद प्रकृतिस्वरत्व होता है।
वरुणम्	'कृवृदारिभ्य उन्नन्' (उणादि ३.३.३३) सूत्र से 'वृ' धातु से 'उन्नन्' प्रत्यय। नित् होने के कारण आद्युदात्त है।
रिशादसम्	रिशन्ति (हिंसन्ति) इति रिशाः (शत्रु/रोग)। 'इगुपधज्ञाप्र्रीकिरः कः' (पा. सू. ३.१.१३५) से 'क' प्रत्यय। तान् अत्ति इति रिशादाः (शत्रुओं को खाने वाला)। 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' (उणादि ४.६.२८) से असुन् प्रत्यय।
धियम्	'धी' शब्द निघण्टु (२.१.२१) में अपः आदि २६ कर्मनामों में पठित है। यह प्रातिपदिक स्वर से अन्तोदात्त है।
घृताचीम्	घृतम् अञ्चति इति घृताची। 'ऋत्विग्दधृक्...' (पा. सू. ३.२.५९) से क्विन् प्रत्यय। 'अनिदिताम्' (६.४.२४) से नकार का लोप, और 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' से डीप् प्रत्यय। 'अचः' (६.४.१३८) से अकार लोप होकर 'चौ' (६.३.१३८) से दीर्घ हुआ है।
साधन्ता	'राध साध संसिद्धौ' धातु से लट् लकार के स्थान पर शत् (शत) प्रत्यय। यहाँ 'सुपां सुलुक्...' (पा. सू. ७.१.३९) से द्वितीया विभक्ति के द्विवचन (औ) को 'आ' (आकारादेश) हुआ है (साधन्तौ -> साधन्ता)।

मन्त्र विनियोग एवं प्रमाण (Mantra Viniyoga)

ऋषि मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	देवता मित्रावरुणौ
छन्द गायत्री	स्वर षड्ज

विनियोग विवरण

यज्ञीय परम्परा: आचार्य सायण के भाष्य के अनुसार, सोमयाग में प्रउग शस्त्र के अन्तर्गत मैत्रावरुण (मित्र और वरुण देवता सम्बन्धी) भाग में हवि प्रदान करने के लिए इस मन्त्र का विनियोग किया जाता है।

(प्रमाण: "अहमस्मिन् कर्मणि हविष्प्रदानाय... मित्रं हुवे")

यौगिक परम्परा: वहीं पारमार्थिक एवं योग साधना में इसका विनियोग प्राणायाम द्वारा प्राण-अपान को सिद्ध कर प्रज्ञा (बुद्धि) को जाग्रत करने के लिए होता है।

Rishi Vishwamitra Vidya Foundation

Presented by: Acharya Kapil

Contact: 8756390767